IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुगलकालीन समय में गरीबजन की वेशभूषा

मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय
सीकर –332001

सारांश :–: मुगल काल तक पहुँचते–पहुँचते वेशभूषा, श्रृंगार, प्रसाधनों, आभूषणों में महत्वपूर्ण परिवतर्न हुए। गरीब तबकों के बीच परिधान के मामलों में, जो इस विषय में अपनी आवश्यकताएँ कम से कम रखते थे।साधारणतया गरीब वर्ग के अन्तर्गत किसान, कारीगर, श्रमिक तथा दास थे।गरीब वर्ग के लोग लंगोट पहनकर नंगे पाव चलते थे। गरीब जनता अपने शरीर से तब तक वस्त्र नहीं उतारती थी जब तक कि वह फट नहीं जाता था।[1]। मुगलकालीन इतिहासकार अबुल फजल के अनुसार बंगाल के अधिकांश निवासी नंगे रहते थे और किसी तरह अपने आवश्यक अंगों को ढंक सकते थे। मनूची के अनुसार लोग एक धोती पहनते थे और एक कपड़ा (चादर) अपने कंधों पर रखते थे जो दिन में वस्त्र का काम करता था और रात्रि में बिस्तर का। सामान्यतः एक हिन्दू के लिए इतने वस्त्र पर्याप्त मानें जाते थे। निम्न वर्ग के मुसलमान प्रायः एक टोपी एवं एक पायजामा एवं एक साधारण कमीज पहनते थे।

किसी भी युग में वस्त्र, आभूषण आदि सभी तत्कालीन समाज और सभ्यता तथा संस्कृति के प्रतीक माने जाते थे। फिर भी किसी भी युग की सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण वस्त्र ही होता था मुगल काल तक पहुँचते–पहुँचते वेशभूषा, श्रृंगार, प्रसाधनों, आभूषणों में महत्वपूर्ण परिवतर्न हुए। अबुल फजल ने आईन–ए–अकबरी में लिखा है कि सम्राट की उदारता के कारण हर समुदाय के लोग अपने रीति–रिवाजों के अनुसार कपड़े पहनते हैं और कोई रोक–टोक नहीं करता था। युगों से भारतीयों के वस्त्र मुख्यतः भौगोलिक एवं जलवायु सम्बधी परिस्थितियों से निर्धारित होते रहे हैं पर उसमें देश के सामाजिक, आर्थिक तौर–तरीकों और रीति–रिवाज ने भी अपनी ऊँची भूमिका अदा की है। इस बारे में इस भावना ने भी काम किया है कि कपड़े–लत्ते, आभूषण आदि ऐसे और इस अवसर पर पहने जाये कि आदमी सुन्दर दिखे। सच पूछा जाये तो उन दिनों ज्यादा जोर इस बात पर दिया जाता था कि कपड़ों से शरीर का उचित ढंग से बचाव हो सके। मुगल काल में ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों द्वारा प्रयुक्त परिधानों में एकरूपता या समानता न थी। किसानों और अन्य गरीब तबकों के बीच परिधान के मामलों में, जो इस विषय में अपनी आवश्यकताएँ कम से कम रखते थे। हमारे मध्ययुगीन परिधान ने विदेशियों और खासकर यूरोपीय

यात्रियों को प्रभावित किया था और उन्होंने बंगाल, पंजाब और अन्य स्थानों की जनता के परिधानों के विषय में वर्णन किया है।

गरीबजन के वस्त्रों और उच्च वर्गों के वस्त्रों के बीच जमीन आसमान का अंतर था। विभिन्न समुदायों के गरीबजन के वस्त्र प्रायः समान हुआ करते थे। साधारणतया गरीब वर्ग के अन्तर्गत किसान, कारीगर, श्रमिक तथा दास थे।गरीब वर्ग के लोग लंगोट पहनकर नंगे पाव चलते थे। गरीब जनता अपने शरीर से तब तक वस्त्र नहीं उतारती थी जब तक कि वह फट नहीं जाता था।प्रसिद्ध इतिहासकार युसुफ हुसेन ने लिखा है कि विदेशी यात्री बारबोसा जो 16वीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थ भाग में भारत आया, वह मालाबार में राज करने वाली जाति के बारे में लिखता है कि कोटि से निचले भाग को सफेद सूती या रेशमी कपड़े से ढंकने के अतिरिक्त वे वस्त्रहीन रहते थे। कभी–कभी वे सामने से खुला कोट पहन लेते थे जो बीच जांध तक लम्बा होता था।

बाबर ने अपनी जीवनी में इसी बात को लिखा है कि अबुल फजल के अनुसार 'बंगाल के स्त्री–पुरूष दोनों ही नग्न रहते और केवल एक लंगोट उनके नीचे भाग को ढका रहता था। विदेशी यात्री मोरलैण्ड के अनुसार लोगों के द्वारा परिधानित किये जाने वाले वस्त्रों के वर्णन में पड़ने के बजाय उनकी वस्त्रहीनता पर बल दिया जाये। मुगलकालीन इतिहासकार अबुल फजल के अनुसार बंगाल के अधिकांश निवासी नंगे रहते थे और किसी तरह अपने आवश्यक अंगों को ढंक सकते थे। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार गोलकुण्डा के निवासी केवल आधे शरीर को ढक पाते थे। वस्तुतः यही स्थिति भारत में सामान्यतः सब जगह निम्न वर्ग के शूद्र लोगों में भी रहती थी। मनूची के अनुसार लोग एक धोती पहनते थे और एक कपड़ा (चादर) अपने कंधों पर रखते थे जो दिन में वस्त्र का काम करता था और रात्रि में बिस्तर का। सामान्यतः एक हिन्दू के लिए इतने वस्त्र पर्याप्त मानें जाते थे। निम्न वर्ग के मुसलमान प्रायः एक टोपी एवं एक पायजामा एवं एक साधारण कमीज पहनते थे। जाड़े के दिनों में रूई से भरी (रजाई के समान) टोपियां उत्तर भारत में प्रचलित थी। उच्च व मध्यम वर्ग के लोग जूते–जूतियां पहनते थे जो कि तुर्की जूते–जूतियों की भांति आगे से नुकीली होती थी तथा जिनकी ऐड़ी नीची व ऊँची दोनों प्रकार की होती थी। किन्तु शूद्र प्रायः सभी नंगे पैर ही रहते थे।

एक औसत बंगाली के कपड़े का वर्णन करते हुए विदेशी यात्री मैनरीक ने इस प्रकार लिखा है कि गरीब जनता का वस्त्र सूती कपड़े का होता है जिसमें दर्जी का काम बिलकुल नहीं के बराबर होता है। पुरूष लोग कमर के नीचे छः या सात बालिश्त का कपड़ा पहनते है और उनके शरीर का उपरी हिस्सा नंगा रहता था। वह जूते नहीं पहनते थे। उनके मांथे पर पंगड़ी रहती थी जो 12–14 बालिश्त लम्बी और 2 हाथ चौडी रहती है। वह देश के अधिकांश भागों में एक रूपये के चौथाई (चार आने) में मिलती थी। आगरा के लोग इतने निर्धन थे कि वे अधिकतर नंगे रहते थे। वे केवल गुप्तांगों पर एक कपड़े का टुकड़ा ही प्रयोग करते थे। फिंच ने बनारस के विषय में लिखा है कि जाड़े में लोग ऊनी कपड़े के स्थान पर बण्डिया पहनते थे।

मुगलकालीन समयमें सामान्य लोग पगड़ियो का प्रयोग भी खूब करते थे। हिन्दुओं की पगड़ी रंगीन, सीधी, ऊँची और नुकीली होती थी। पगड़ी बांधने की शैली विभिन्न जातियों एवं विभिन्न प्रांतवासियो की भिन्न–भिन्न हुआ करती थी। कुछ लोग 20–30 गज लम्बे सिल्क के कपडे की पगड़ी प्रयोग में लाते थे। कुछ लोग पगड़ी के कपडे पर सिल्क एवं सुनहले तार की कढ़ाई कराते थे। पगड़ी बांधते समय कपड़े के ऊपर का

सुनहला भाग आगे की तरफ लटकता रहता था। कीमती पगड़ी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करती थी। स्त्रियाँ सभी भागों में साड़ी पहनती थी लेकिन कुछ भागों की स्त्रियाँ घाघरा पहनती थी।

मुगलकालीन समयमें महिलाओं के वस्त्रों में अधिक विभिन्नता नहीं थी। हिन्दू महिलाऐं साधारणतः साड़ी और छोटी जाकिट या जनानी कूर्ती पहनती थी पर उसके नीचे अंगिया न होती थी। स्त्रियाँ केवल अपने शरीर को ढकने के लिए धोती पहनती थी। स्त्रियाँ धोती और अंगिया से अपना काम चलाती थी। यह बात भारत के अधिकांश लोगों के लिए सही थी। साधारणतः साड़ी का उपयोग सभी वर्ग की महिलाये किया करती थी। और वह सफेद, पीले, नीले, काले आदि रंगों की होती थी। उच्च वर्ग की महिलाएं अधिकाशंतः बहुत महीन मास्लिन और कोई अन्य सूती या सिल्क के वस्त्र पहनती थी जिनसे कभी–कभी उनके अंग झलकते थे।

अधिकांश मामलों में बंगाली महिलाऐं 'कोछा' (निचले वस्त्र का चूनट जो साड़ी के सामने वाले हिस्से में ढीला–ढाला लटकता था) का प्रयोग करती थी। उच्च वर्ग की महिलाऐं अधिकांशतः बहुत महीन सूती वस्त्र या सिल्क के वस्त्र पहनती थी। महिलाऐं अक्सर किसी सम्मानित या अपने से किसी ऊँची स्थिति के व्यक्ति से बाते करते हुए अपनी साड़ी का आधा हिस्सा कंधे या सिर पर डाल लिया करती थी।

थेवनाट ने हिन्दू स्त्रियों के बारे में लिखा है कि वे अपने को कमर से नीचे एक कपड़े में लपेटे रहती थी जो उन्हें पेटीकोट की तरह पाँवों तक ढंके रहता है। वह उस कपड़े को इस तरह काटती है जिससे उसका एक सिरा पीठ के पीछे से होता हुआ उनके सिर तक पहुँचता है।

मुगलकालीन मुस्लिम स्त्रियाँ पर्दे की प्रथा का सामान्यतः कड़ाई से प्रालन करती थी और वह जब भी घर से बाहर निकलती थी, बुर्का ओढ़कर ही निकलती थी पर हिन्दू स्त्रियाँ आमतौर पर बिना पर्दे के ही निकलती थी पर कभी–कभी वे भी घूंघट डाले रहती थी। गरीब महिलाएं बिना जूते के ही बाहर निकलती थी पर अमीर महिलाऐं साधारणतः विभिन्न डिजाईनों और रंगों के जूते पहनती थी। मुस्लिम महिलाओं की प्रमुख विशेषता वस्त्र के सम्बंध में यह थी कि वे शलवार और आधी बाँह की कमीज पहनती थी। वह बाँह के शेष हिस्से में गहने पहनती थी। सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि भूषणने दिल्ली की मुस्लिम महिलाओं द्वारा चोली, शलवार, पायजामा और जूते पहने जाने की चर्चा की है।

प्रसिद्ध इतिहासकार युसुफ हुसेन ने लिखा है कि मुस्लिम नारियाँ सख्ती से पर्दा करती थी किन्तु उत्तरी भारतीय हिन्दू सामंतों और मध्य श्रेणी की महिलांऐं भी पर्दा करती थी। वह लोग अपनी अच्छी स्थिति के कारण अपनी स्त्रियोंके श्रम के बिना अपना काम चला लेते थे। निर्धन वर्ग की महिलाओं के लिए काम करना आवश्यक था और अनावश्यक शिष्टाचारों को अलग रख दिया गया था, किन्तु इस पर भी निम्न श्रेणी की नारियाँ जब आम लोगों में आती थी तो लोगों से अपना मुँह बड़ी सावधानी से छुपाती थी।

अबुल फजल ने आईन–ए–अकबरी में लिखा है कि सम्राट अकबर ने उस समय प्रचलित वस्त्रों के पुराने नामों को नया नाम दिया है–

पुराने वस्त्रों के नाम	अबकर द्वारा दिया गया नाम
जमा	सर्वगाती
ठजार	यारे पीराहन
नैमतना	तनजेब
फौता	प्तगत
बुर्की	चित्रगुप्त
कुलाह	शीश शोभा
मुयेवाफ	केशधन
पटका	कटिजेब
शाल	परमनर्म
पशमीना	परम गर्म
कपरघूर	कपूरनूर
पाये अफजार	चरनधरन